निदेशक मंडल की रिपोर्ट का अनुलग्नक–IV

एकीकृत रिपोर्ट

"एकीकृत रिपोर्टिंग" एक ऐसी संकल्पना है, जो विविध प्रकार के ऐसे उपाय करने के लिए तैयार की गई है, जो दीर्घकालिक मूल्य श्रृंखला में और समाज में संगठनों द्वारा अदा की जाने वाली भूमिका में अपना योगदान देते हैं। यह वित्तीय पूंजी, आर्थिक सामाजिक और पर्यावरणीय प्रणाली में योगदान से परे किसी निकाय द्वारा सृजित मूल्य श्रृंखला का एक समग्र परिदृश्य है। इसका वास्तविक उद्देश्य स्थायित्व को व्यापार रणनीति से जोड़ना और कंपनी तथा इसके पणधारकों को गैर वित्तीय प्राथमिकता क्षेत्रों की पहचान करने में सहायता करना है।

अंतर्राष्ट्रीय एकीकृत रिपोर्टिंग परिसर (आईआईआरसी) द्वारा यथा संवर्धित एकीकृत रिपोर्टिंग के अंतर्गत ऐसे 6 पूंजीगत घटकों के माध्यम से व्यापारिक प्रकटनों पर विश्वास किया जाता है, जो व्यापारियों को दीर्घकालिक निर्णय प्रक्रिया और आयोजना में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। सेबी ने अपने दिनांक 6 फरवरी, 2017 के परिपत्र के जरिए शीर्ष 500 सूचीबद्ध कंपनियों को वित्तीय वर्ष 2017–18 से आगे स्वैच्छिक आधार पर एकीकृत रिपोर्टिंग (आईआर) को अपनाने की सलाह दी है। आरईसी में वित्तीय वर्ष 2019–20 के लिए अपनी एकीकृत रिपोर्ट स्वैच्छिक आधार पर तैयार की है। आरईसी की एकीकृत रिपोर्ट में निम्नलिखित पूंजियों को शामिल किया गया है:

- वित्तीय पूंजी
- विनिर्मित पूंजी
- बौद्धिक पूंजी
- मानव पूंजी
- सामाजिक और संबंध आधारित पूंजी
- प्राकृतिक पूंजी

एकीकृत रिपोर्ट पारदर्शिता और जबावदेही में वृद्धि करती है, जो इस बात का प्रकटन कर विश्वास और सत्यनिष्ठा के निर्माण के लिए अनिवार्य हैं कि प्रमुख पणधारकों की वैध गैर वित्तीय आवश्यकताओं और हितों को कैसे समझा जाता है, कैसे उनपर विचार किया जाता है और निर्णय, कार्रवाई और कार्य निष्पादन के साथ–साथ जारी संप्रेषण के माध्यम से कैसे उनकी प्रतिक्रिया दी जाती है। आरईसी के दृष्टिकोण से इन 6 पूंजियों की व्याख्या नीचे दी गई है:

वित्तीय पूंजी

वित्तीय पूंजी से संगठन के व्यापारिक प्रचालनों, वित्तपोषण और निवेश संबंधी गतिविधियों से संगठन के लिए उपलब्ध निधियां अभिप्रेत है। वित्तीय पूंजी किसी भी संगठन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यह आने वाले वर्षों में कंपनी के वित्तीय कार्य निष्पादन से प्रतिबिंबित होती है।

आरईसी वित्तीय पूंजी प्रदाताओं को स्थायी आधार पर और लगातार वित्तीय लाभ प्रदान कर मूल्य श्रृंखला सृजित करने में सक्षम रहा है। इससे कंपनी घरेलू के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से प्रतिस्पर्धी दरों पर निधियां जुटाने में सक्षम रही है। इसे निम्नलिखित प्रमुख कार्य निष्पादन संसूचकों के माध्यम से देखा जा सकता है।

31 मार्च 2020 की स्थिति के अनुसार आरईसी की सकल ऋण परिसंपत्ति खाताबही पिछले वर्ष में ₹ 2,81,209.68 करोड़ की तुलना में बढ़कर ₹ 3,22,424.68 करोड़ हो गई है। वित्तीय वर्ष 2019–20, के दौरान स्टैंड अलोन आधार पर आरईसी की प्रचालन आय पिछले वित्तीय वर्ष में ₹ 25,309.72 करोड़ की तुलना में बढ़कर ₹ 29,791.06 करोड़ हो गई है। इसी प्रकार वर्ष के लिए संवितरण भी पिछले वर्ष में ₹ 72,165.43 करोड़ की तुलना में बढ़कर ₹ 75,666.95 करोड़ हो गया है।

इसके अलावा वित्तीय वर्ष 2019–20, के लिए कर पूर्व लाभ ₹ 6,983.29 करोड़ था। वित्तीय वर्ष 2019–20, के लिए निबल लाभ और कुल वृहद आय क्रमशः ₹ 4,886.16 करोड़ और ₹ 4,336.37 करोड़ थी। 31 मार्च, 2020 की स्थिति के अनुसार आरईसी का निबल मूल्य ₹ 35,076.56 करोड़ था, जो 31 मार्च, 2019 की स्थिति के अनुसार कंपनी के निबल मूल्य अर्थात ₹ 34,302.94 करोड़ की तुलना में 2.26% अधिक है।

आरईसी सरकार को देय करों के भुगतान में भी चौकन्ना रहा है, इस प्रकार यह देश की समग्र प्रगति और विकास को बढ़ावा दे रहा है।

पूंजी के परिनियोजन का पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व वित्तीय पूंजी में और इसके माध्यम से मानव पूंजी के साथ–साथ सामाजिक और संबंध आधारित पूंजी बढ़ाने में किया जाता है। आरईसी ने विद्युत क्षेत्र के विकास में योगदान के लिए अपनी वित्तीय पूंजी के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका रखी है।

विनिर्मित पूंजी

विनिर्मित पूंजी को व्यापक रूप से ऐसी भौतिक वस्तुओं के रूप में देखा जाता है, जो किसी संगठन द्वारा बिक्री अथवा अपने स्वयं के उपयोग के लिए रखी जाती हैं, जिसमें ऐसी वस्तुएं शामिल होती हैं, जो माल, भवनों, अवसंरचना और उपस्कर इत्यादि के उत्पादन में इस्तेमाल के लिए किसी संगठन के पास उपलब्ध होती है। आरईसी, एक गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी होने के नाते विद्युत क्षेत्र की परियोजनाओं/योजनाओं के वित्तपोषण का कारोबार करता है, इस प्रकार यह प्रत्यक्ष रूप से विनिर्मित पूंजी का सृजन नहीं करता है और इसकी प्रमुख सामग्री आवश्यकताओं में बिजली, कार्यालयी आपूर्तियां, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित उपस्कर शामिल हैं। कार्यकुशलता में सुधार करने और उसे बनाए रखने के प्रयोजन से आरईसी सूचना प्रौद्योगिकी प्रणालियों, अवसंरचना और भौतिक परिसंपत्तियों इत्यादि को उन्नत बनाने के लिए उनमें निवेश करता है।

कुशलतापूर्वक अपने पणधारकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आरईसी के देश भर में क्षेत्रीय/राज्य/उप कार्यालय हैं। कंपनी अपने सभी कर्मचारियों को उपयुक्त आईटी उपकरण, स्मार्ट बजट, वीपीएन कनेक्शन इत्यादि उपलब्ध कराती है, जिससे कि वे व्यापारिक समुदाय सुनिश्चित करने के लिए दूरस्थ स्थानों से, कार्यकुशल ढंग से और निर्बाध रूप से काम करने में सक्षम हो सके।

उन्नत प्रणालियों का इस्तेमाल करते हुए सहयोगात्मक कार्य स्थल निर्मित करने में सहायता के लिए आरईसी गुरूग्राम, हरियाणा में शीघ्र ही एक नया अत्याधुनिक सुविधाओं (स्टेट ऑफ द आर्ट) से युक्त कार्यालय भवन तैयार करने वाला है। विनिर्मित पूंजी आरईसी को मानव संसाधन (पूंजी) और साथ ही बौद्धिक पूंजी निर्मित करने में सहायता प्रदान करती है।

बौद्धिक पूंजी

बौद्धिक पूंजी ऐसी अमूर्त परिसंपत्तियों को संदर्भित करती है, जो कंपनी की वित्तीय स्थितियों को मजबूत बनाती है। इन परिसंपत्तियों में कर्मचारियों की विशेषज्ञता, संगठनात्मक प्रक्रियाएं और संगठन के भीतर ज्ञान योग और ब्रांड प्रतिष्ठा शामिल होते हैं।

आरईसी विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार की राष्ट्रीय महत्व वाली विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के लिए नोडल एजेंसी अथवा परियोजना प्रबंधन/कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में कार्य करता है और राज्य सरकारों, राजकीय विद्युत बोर्डों, राजकीय बिजली कंपनियों, निजी क्षेत्र के ऋणकर्ताओं आदि के साथ घनिष्ठ समन्वय स्थापित करते हुए कार्य करता है। विद्युत मंत्रालय की ओर से आरईसी और इसकी सहायक कंपनियों ने कई अनुप्रयोग/पोर्टल विकसित किए हैं जैसे कि ऊर्जा मित्र, गर्व, उदय इत्यादि, जो सरकारी योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन में मील का पत्थर साबित हुए हैं।

बौद्धिक पूंजी मानव संसाधनों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है और यह आरईसी की रणनीति की धुरी है। आरईसी ने एक प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संस्थान अर्थात आरईसी इंस्टीट्यूट ऑफ पावर मैनेजमेंट एंड ट्रेनिंग (आरईसीआईपीएमटी), हैदराबाद की स्थापना वर्ष 1979 में की थी, जो तकनीकी के साथ–साथ गैर तकनीकी क्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से बेहतर उत्पादकता और साथ ही विद्युत क्षेत्र की प्रणालियों के प्रचालन और रख–रखाव (ओ एंड एम) के लिए अपनाई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी देने के लिए विद्युत क्षेत्र में घटित हो रही घटनाओं के बारे में जागरूकता और ज्ञान बढ़ाने के प्रयोजन से बिजली कंपनियों के मानव संसाधनों के प्रशिक्षण के लिए समर्पित है। वित्तीय वर्ष 2019–20 के दौरान आरईसीआईपीएमपी, हैदराबाद ने विद्युत क्षेत्र के संगठनों में कार्यरत विशेषज्ञ और अनुभवी संसाधनों की सहायता से 11,993 कार्य दिवसों का प्रशिक्षण प्रदान किया।

आरईसी ने अपने व्यापार के अनुरूप आवश्यक महत्वपूर्ण सक्षमताएं विकसित की हैं और पर्याप्त प्रशिक्षण और कौशल प्रदान कर उसे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किया है।

मानव पूंजी

मानव पूंजी किसी भी कंपनी के कर्मचारियों के पास उपलब्ध कौशल, ज्ञान और विशेषताओं को संदर्भित करता है, जो संगठन को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति, वृद्धि और विकास तथा नवाचारी बने रहने में सहायता प्रदान करता है। इसमें देश भर के प्रतिष्ठित संस्थानों से प्रतिभाशाली कार्यबल की सेवाएं प्राप्त करना और उन्हें ऑनबोर्ड करना, उनकी प्रतिभाओं और कौशलों में निखार लाना, प्रबंधन का कार्य निष्पादन और कर्मचारियों का कल्याण शामिल हैं।

आरईसी ने समग्र कार्य दृजीवन संतुलन पर केंद्रित सामान्य कानूनों, विनियमों और सुदृढ़ सैद्धांतिक प्रक्रियाओं के अनुरूप कई कर्मचारी कल्याण उन्मुख नीतियों का अपनाया है, जिनके तहत कर्मचारियों को सही देख–रेख और उनके पोषण के लिए एक अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है और जिसका उद्देश्य बेहतर कर्मचारी कार्य निष्पादन के लिए आवश्यक व्यापारी योग्यता और कौशल को प्रखर बनाने के साथ–साथ "दिव्यांग कर्मचारियों" सहित कर्मचारियों को अपने कार्य निष्पादन और उत्पादकता में सुधार करने के लिए हर संभव अवसर और सहायता प्रदान करना है। कर्मचारी विभिन्न प्रकार के खेल–कूद टूर्नामेंट, सांस्कृतिक, साहित्यिक और प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमों में भी भाग लेते हैं, जो उनके समग्र विकास को बढ़ावा देने में सहायक हैं। आरईसी ने अपने कर्मचारियों के बीच विश्वास और सहयोग का एक ऐसा वातावरण निर्मित किया है, जिसके फलस्वरूप बहुत ही प्रेरक कार्यबल यहां उपलब्ध है और इसके व्यापारिक कार्य निष्पादन में लगातार सुधार हुआ है।

इसके अलावा कोविड–19 महामारी के दौरान कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और उनके बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की दिशा में कार्यालय परिसरों में नियमित रूप से स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं और कर्मचारियों को मास्क पहनने, सैनिटाईजर और अन्य सुरक्षा/संरक्षा उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। आरईसी का मानना है कि मानव पूंजी संगठन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिसंपत्ति है।

सामाजिक और संबंध आधारित पूंजी

सामाजिक और संबंध आधारित पूंजी ऐसे संसाधनों और मूल्यों को संदर्भित करती है, जो किसी संगठन और इसके पणधारकों के बीच संबंधों द्वारा सृजित किए जाते हैं। इन संबंधों में समुदाय, सरकार, ग्राहकों और आपूर्ति श्रृंखला भागीदारों के साथ संबंध शामिल होते हैं। आरईसी का उद्देश्य लोगों और बड़े पैमाने पर समाज के जीवन में बड़ा ही सकारात्मक परिवर्तन लाना है। कंपनी समरज की अपेक्षाओं को पूरा करने की दिशा में लगातार प्रयत्नशील हैं, जिससे कि सामाजिक और आर्थिक असमानताओं में वास्तविक रूप से और कभी दूर न होने वाली कमी के लक्ष्य को पूरा करने में सहायता प्रदान की जा सके और साथ ही पर्यावरण की रक्षा की जा सके।

कंपनी कर्मचारियों की भर्ती के मामले में महिलाओं और अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति / अन्य पिछड़ा वर्ग/अन्यथा सक्षम श्रेणियों के लिए आरक्षण के संदर्भ में भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी किए गए दिशा निर्देशों / निर्देशों का भी अनुपालन कर रही है।

वित्तीय वर्ष 2019–20 के दौरान कंपनी ने पर्यावरणीय स्थिरता, कौशल विकास, स्वच्छता, स्वास्थ्य देख–रेख और अन्यथा सक्षम लोगों की सहायता के लिए इन क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के कार्यान्यन के लिए सीएसआर पहलों के अंतर्गत वित्तीय सहायता मंजूर की है।

कोविड–19 महामारी के दौरान वितरण हेतु खाने के पैकेट की सुपुर्दगी

इसके अलावा आरईसी ने वित्तीय वर्ष 2019–20 और 2020–21 के दौरान कोविड–19 महामारी के कारण उत्पन्न हुई स्थिति से निपटने के लिए आपात स्थितियों में प्रधानमंत्री नागरिक सहायता और राहत (पीएम केयर्स) निधि में रु 150 करोड़ की सीएसआर सहायता का योगदान दिया है और साथ ही श्रमिकों / जरूरतमंद लोगों को खाद्यान्न / राशन, उपयोगिता पैकेट इत्यादि प्रदान करने और कोविड–19 महामारी से प्रभावित भारत के विभिन्न भौगोलिक भूभागों में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को चिकित्सा उपस्कर उपलब्ध कराने के लिए भी ₹ 10 करोड़ आवंटित किए हैं। आरईसी के कर्मचारियों ने **कोविड–19** महामारी से निपटने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों में सहायता के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) में अपने एक दिन के वेतन का स्वेच्छा से अंशदान दिया है। आरईसी ने विश्व रक्त दान दिवस के अवसर पर अपने कॉर्पोरेट कार्यालय में एक रक्त दान अभियान भी आयोजित किया और कंपनी के 80 स्वयंसेवियों ने इस अभियान में भाग लिया।

आरईसी वंचित वर्गों, सुभेद्य लोगों और मुख्य धारा से विमुख पणधारकों के लिए बहुत से उपाय करता है और इस प्रकार सामाजिक और संबंध आधारित पूंजी बढ़ाने में योगदान देता है।

प्राकृतिक पूंजी

प्राकृतिक पूंजी ऐसी भावना का प्रतिनिधित्व करती है कि प्रकृति इतनी महत्वपूर्ण मूल्य श्रृंखला प्रदान करती है, जो मानव अस्तित्व के लिए नितांत जरूरी है और इस प्रकार ऐसी कोई भी कार्रवाई जिससे प्राकृतिक पूंजी को क्षति पहुंचती है, वह हमारे समाज के लिए अपने आप में ही निराशाजनक (स्वयं को हराने वाली) है।

आरईसी ई–मोबिलिटी सहित नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के विकास को लगातार और तेजी से सहायता प्रदान करता आ रहा है। नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के विकासकर्ताओं को प्रतिस्पर्धी शर्तों पर ऋण प्रस्तावित किए जाते हैं। आरईसी यह भी सुनिश्चित करता है कि इसके द्वारा स्वीकृत की गई सभी परियोजनाएं, चाहे वे नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र से संबंधित हों अथवा अन्यथा अन्य क्षेत्रों से संबंधित हों, वे मौजूदा पर्यावरणीय शर्तों का अनुपालन करें। इसके अलावा आरईसी में खतरनाक उत्सजर्नों को कम करने के लिए थर्मल पावर प्लांटों में प्रदूषण नियंत्रण उपस्कर स्थापित करने के लिए विभिन्न परियोजनाओं का वित्तपोषण किया है।

आरईसी वर्ष 2017 में लंदन स्टॉक एक्सचेंज के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार खंड में सूचीबद्ध हरित बांडों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से धनराशि जुटाने वाला पहला भारतीय पीएसयू बन गया है। उपर्युक्त हरित बांड की अवधि 10 वर्ष है और उनसे होने वाली आय का उपयोग जलवायु बांड मानकों के अनुसार पात्र हरित परियोजनाओं के वित्तपोषण / पुनर्वित्तपोषण के लिए किया जाता है।

आरईसी देश भर में अवस्थित अपने सभी कार्यालयों में 'ई–ऑफिस' प्रणाली लागू कर पेपर रहित कार्यालय बनने वाला विद्युत क्षेत्र का पहला सीपीएसई है, इस प्रकार यह अपने कर्मचारियों कों तुलनात्मक रूप से कम कार्बन फुटप्रिंट के साथ काम करने में सक्षम बना रहा है। आरईसी कोविड–19 महामारी के बाद से दूरस्थ कार्य पद्धतियों का इस्तेमाल करने के लिए अपने कर्मचारियों को लगातार प्रोत्साहित करता है। आरईसी ने बहुत सी पर्यावरणीय दृष्टि से अनुकूल प्रक्रियाओं को अपनाया है, जैसे कि बैठकों के लिए कांच की बोतल और कांच के टंबलर का प्रयोग, प्लास्टिक के फोल्डरों के बजाय कार्डबोर्ड के फोल्डरों का प्रयोग, कैंटीन में पलास्टिक आइटमों के बजाय स्टील कटलरी का प्रयोग इत्यादि। बिजली की बचत के लिए भी कई उपाय किए गए हैं। कंपनी ने अपने इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट को भी न्यूनतम किया है तथा सरकार / प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के साथ पंजीकृत रिसाइक्लरों के माध्यम से इसका उत्तरदायी निपटान सुनिश्चित किया है।

आरईसी न केवल प्राकृतिक संसाधनों की खपत न्यूनतम करते हुए बल्कि उसके दुरूपयोग को भी न्यूनतम करते हुए प्राकृतिक पूंजी की सुरक्षा के लिए प्रयास करता है।